OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 19 जनवरी -I-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

साकार में ब्रह्मा के चरित्र ने लिया आकार

महापुरुषों का जीवन एक चमत्कार होता है। उनका जन्म तो साधारण मनुष्यों की तरह ही होता, पर वे जीते हैं एक असाधारण मनुष्य की तरह। जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है, किंतु जिस जीवन से देश व समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी-किसी में होता है। भारतीय संस्कृति के प्राण, अहिंसा और त्याग के प्रतिमूर्ति ने इन सभी आदर्शों को चरितार्थ किया है। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा समाज के लिए एक पथ-प्रदर्शक रहे।

बहुआयामी व्यक्तित्व की सबसे पहली और सबसे प्रमुख बात यह थी कि वे नैतिकता के विशाल विग्रह थे। उन्होंने लोक-मत के दबाव में आकर या किसी भी आर्थिक कारणवश अपने किसी भी नैतिक सिद्धान्त का उल्लंघन नहीं किया। वे उत्कृष्ट, बौद्धिक, समग्रता तथा अद्वितीय नैतिक श्रेष्ठता से सम्पन्न व्यक्ति थे। आध्यात्मिक उत्कर्ष और मानसिक धृति की दृष्टि से योगाचार के एक जीते-जागते उदाहरण थे।

एक योग्य प्रशासक, एक दूरदर्शी योजनाकार तथा एक महान दृष्टा

तथापि, वे मात्र सुधारक नहीं थे, बल्कि एक महान प्रशासक भी थे, जिनकी प्रशासन-प्रणाली मनुष्य के प्रति प्रेम और सम्मान पर आधारित थी। वे मानव-जाति की सेवा से अभिप्रेरित थे और दिव्य गीत से परिपूर्णता प्राप्त करना उनका लक्ष्य था।

वे एक बुद्धिमान तथा दूरदर्शी आत्मज्ञ थे। उनके पास विलक्षण दृष्टि थी। अपने समय से बहुत आगे की ओर देखकर उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था को एक ईश्वरीय विश्व विद्यालय का रूप दिया और उसे एक आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी प्रणाली बना दिया। वे पूर्वानुमान कर सकते थे कि कौन-सी आत्मायें भविष्य में किस भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं और करेंगी। और इसीलिए दशकों पूर्व उन्होंने उनकी देखभाल करने और उन्हें मार्गदर्शन देने का कार्य आरंभ कर दिया, ताकि उन्हें इन बड़े, सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए तैयार किया जा सके। उन्होंने अल्पकालिक, मध्यकालिक तथा दीर्घकालिक आधार पर संस्था के विकास की योजना बनाई। उस समय जबकि संस्था के विरूद्ध उग्र विरोध था, उन्होंने मानसिक रूप से यह देख लिया था कि भविष्य में संस्था के अनुयायियों की संख्या अकल्पनीय रूप से बढ़ेगी और उनके कार्य का स्वरूप क्या होगा, और इसीलिए उन्होंने उन्हें उन परिस्थितियों के लिए अद्वितीय पूर्व दृष्टि के साथ प्रशिक्षित किया। उनकी पूर्व दृष्टि और उनके आयोजन तथा मार्गदर्शन के कारण ही संस्था का इतना विस्तार हुआ, इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जो आज हम देख रहे हैं। और प्रथम, द्वितीय तथा अनुवर्ती पंक्तियों के समर्पित कार्यकर्ताओं के एक विशाल मंडली का निर्माण हुआ।

परमात्मा शिव की दर्शन-प्रणाली तथा आचार के सर्वोत्तम व्याख्याता

स्वयं और विश्व को बेहतर और सही ढंग से समझने में उन्होंने जो योगदान दिया, वह उनके गुणों का द्योतक है। यद्यपि स्वयं उन्हें औपचारिक विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त हुई थी, तथापि बौद्धिक दृष्टि से वे एक असाधारण पुरुष थे, जो कि एक अद्वितीय विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए दैवी-साधन बने। वे न केवल अति-मानसिकी जटिलताओं और सूक्ष्मताओं में पारंगत थे, न केवल उनके पास अलौकिक विज्ञान की गहरी पैठ थी, न केवल उन्हें आध्यात्मिक आचारों की नई-नई ऊँचाइयों का ज्ञान था, बल्कि वे अद्भुत सादगी और दुर्लभ कुशलता के साथ इन सिद्धान्तों को क्रियान्वित कर सकते थे। इस प्रकार वे परमात्मा शिव के सच्चे व्याख्याकार थे और परमात्मा शिव के मन, वचन और कर्म आदि के सर्वोत्तम व्याख्याता थे।

उनकी अभिव्यंजना-शैली से सभी होते प्रभावित

उनकी अभिव्यंजना-शैली अत्यंत गूढ़ विषय को भी सरल बना देती थी। उन्हें विभिन्न लोगों को विभिन्न स्तर पर संभाषण करने की दुर्लभ प्रतिभा प्राप्त थी। वे बच्चों को भी उतनी ही आसानी से सिखा सकते थे जितनी आसानी से स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को सिखा सकते थे। वे साधारण लोगों, विद्वानों, सभी को समान रूप से, इतने प्रभावी ढंग से सम्बोधित करते थे कि उनके मन आलोकित हो उठते थे। वे गहन विचार, परिशुद्ध अभिव्यक्ति, दृढ़ विश्वास और सर्वोपरि प्रयोजन की ईमानदारी की अपनी शक्ति और व्यवहार की निष्ठा, मनुष्य को समझने की गहराई और प्रेमपूर्ण व्यवहार के ज़रिये लोगों के दिलों में अपनी बात बिठा देते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि अनेक पुरुषों और महिलाओं ने गहरे मानसिक संतापों की अवस्था में परमात्मा(बाबा) के दर्शन किये और बाबा के वचनों तथा कार्यों से उन हताश तथा निराश लोगों को राहत मिली। ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं कि विद्वान जटिल प्रश्नों को लेकर ब्रह्मा बाबा के पास आये और बाबा के संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तरों ने उनकी मनोग्रंथियों को खोलकर उनका रूपांतरण कर दिया।

ब्रह्मा बाबा के शब्दों में एक विशेष जादू था और वह दिन दूर नहीं है जब उनकी स्पष्ट, प्रेरक वाणी को गहन आध्यात्मिक प्रज्ञान की अभिव्यक्ति माना जायेगा।

स्नेहमयी व्यक्तित्व तथा अथक कार्यकर्ता

उनमें न केवल उच्च प्रज्ञा थी, बल्कि व्यक्तित्व के वे सभी गुण थे जो किसी व्यक्ति को, सभी बच्चों, पुरुषों, महिलाओं और युवकों का स्नेही बना देते हैं। जो भी लोग उनसे मिलते थे, उन्हें ऐसा लगता था कि वे बाबा के सर्वाधिक प्रिय पात्र हैं। इसलिए लोगों के हृदय में बाबा के प्रति अतिशय अनुराग उत्पन्न हो गया था। वे मानवता के सच्चे प्रेमी थे और हृदय में पीड़ित लोगों के प्रति संवेदना थी। इसी कारण वे दिन में 20 घंटे अथक कार्य करते थे। ऐसे मानवता उद्धारक, प्राण प्यारे बाबा को स्मृति दिवस पर शत् शत् नमन।